IJARETY

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY (IJARETY)

Volume 12, Issue 3, May-June 2025

Impact Factor: 8.152

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor

doi crossref

निस्केयर NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY(IJARETY)

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 8.152| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Refereed Journal |

|| Volume 12, Issue 3, May-June 2025 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2025.1203181

डिजिटल युग में भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) को एकीकृत करने की चुनौतियाँ और अवसर

Dr. Vaijaynati Sharma

Assistant Professor, Bal Bharti T.T. College, Gandhi Nagar (Alwar) Rajasthan, India

सारांश (Abstract): प्रस्तुत शोध-पत्र डिजिटल परिवर्तन के वर्तमान दौर में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता एवं उसके शैक्षिक एकीकरण की संभावनाओं का विश्लेषण करता है। वैश्वीकरण, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ऑनलाइन शिक्षा और तकनीकी नवाचारों के इस युग में शिक्षा प्रणाली निरंतर रूपांतरित हो रही है, जिससे ज्ञान की प्रकृति, प्रसार और अधिगम की प्रक्रिया में मौलिक परिवर्तन आया है। ऐसे परिवेश में भारतीय ज्ञान प्रणाली, जो सहस्राब्दियों से भारत की सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, दार्शनिक और सामाजिक चेतना का आधार रही है, को आधुनिक शिक्षा में प्रभावी रूप से समाहित करना एक प्रमुख आवश्यकता बन गई है।

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य डिजिटल युग में भारतीय ज्ञान प्रणाली को एकीकृत करने की प्रमुख चुनौतियों—जैसे संरचनात्मक असंतुलन, तकनीकी बाधाएँ, पाठ्यक्रमीय सीमाएँ, शिक्षकों की तैयारी और जनमानस की मानसिकता—का विश्लेषण करना तथा इसके साथ ही डिजिटल प्रौद्योगिकी द्वारा उपलब्ध कराए जा रहे अवसरों—जैसे वैश्विक पहुँच, डिजिटल संग्रहण, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म, अंतःविषय अनुसंधान और नवाचार—को रेखांकित करना है। डिजिटल युग भारतीय ज्ञान प्रणाली के पुनर्जागरण का एक ऐतिहासिक अवसर प्रदान करता है, बशर्ते इसके एकीकरण को सुव्यवस्थित नीति, तकनीकी सहयोग और शैक्षिक दृष्टिकोण के साथ लागू किया जाए। यह शोध भारतीय शिक्षा को वैश्विक मंच पर सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता और बौद्धिक नेतृत्व प्रदान करने की दिशा में एक सुदृढ़ वैचारिक आधार प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द: भारतीय ज्ञान प्रणाली, डिजिटल शिक्षा, IKS, शिक्षा-नीति, प्रौद्योगिकी, नवाचार।

I. परिचय

इक्कीसवीं शताब्दी का वर्तमान युग प्रायः "डिजिटल युग" के रूप में जाना जाता है, जो सूचना, संचार और प्रौद्योगिकी में अभूतपूर्व विकास का प्रतीक है। इंटरनेट, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, क्लाउड कंप्यूटिंग, बिग डेटा, आभासी वास्तविकता और स्वचालन जैसी तकनीकों ने मानव जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र को गहराई से प्रभावित किया है। शिक्षा भी इससे अछूती नहीं रही है। डिजिटल माध्यमों ने ज्ञान की उपलब्धता, प्रसार और अधिगम की प्रक्रिया को अधिक सुलभ, तीव्र और वैश्विक बना दिया है। आज विद्यार्थी भौगोलिक सीमाओं से परे विश्व के किसी भी कोने से ज्ञान प्राप्त कर सकता है, और शिक्षक आधुनिक तकनीकों के माध्यम से शिक्षण को अधिक प्रभावी बना सकते हैं। डिजिटल युग की यह विशेषता—सूचना की त्वरित उपलब्धता, वैश्विक संपर्क, तकनीकी नवाचार और ज्ञान का लोकतंत्रीकरण—शिक्षा प्रणाली को एक नई दिशा प्रदान कर रही है।

डिजिटल युग की एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता है-शिक्षा का अंतःविषय स्वरूप और सतत नवाचार। पारंपरिक विषयों की सीमाएँ अब धुंधली हो रही हैं और विज्ञान, प्रौद्योगिकी, मानविकी तथा सामाजिक विज्ञान परस्पर एक-दूसरे से जुड़ रहे हैं। इस परिवर्तनशील परिदृश्य में शिक्षा केवल रोजगारोन्मुख प्रशिक्षण तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि वह नवाचार, सृजनशीलता, आलोचनात्मक चिंतन और वैश्विक नागरिकता के विकास का माध्यम बनती जा रही है। तथापि, इस तीव्र तकनीकी प्रगति के साथ कुछ गंभीर चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं—जैसे सांस्कृतिक विस्थापन, मूल्यहीनता, नैतिक संकट और स्थानीय ज्ञान परंपराओं की उपेक्षा। यही वह संदर्भ है जिसमें भारतीय ज्ञान प्रणाली का महत्व और अधिक प्रासंगिक हो जाता है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) भारत की बहुआयामी बौद्धिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक परंपराओं का समेकित रूप है, जो सहस्राब्दियों से भारत की सभ्यता को दिशा प्रदान करती आई है। इसमें वेद, उपनिषद, पुराण, दर्शन, आयुर्वेद, योग, गणित, खगोल, वास्तु, व्याकरण, नीति, साहित्य, कला, शिल्प, पर्यावरणीय चिंतन और सामाजिक संगठन जैसी विविध ज्ञान धाराएँ सम्मिलित हैं। IKS केवल अतीत की धरोहर नहीं है, बल्कि वह जीवन-दृष्टि है जो मानव और प्रकृति, व्यक्ति और समाज, विज्ञान और अध्यात्म के बीच संतुलन स्थापित करती है। यह प्रणाली ज्ञान को केवल सूचनात्मक या तकनीकी कौशल के रूप में नहीं देखती, बल्कि उसे जीवन-निर्माण और लोक-कल्याण के साधन के रूप में स्वीकार करती है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली की सबसे विशिष्ट विशेषता इसका समग्र और मूल्य-आधारित दृष्टिकोण है। यहाँ ज्ञान का उद्देश्य केवल भौतिक प्रगति नहीं, बल्कि नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक उन्नयन भी है। भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा को चरित्र निर्माण, सामाजिक उत्तरदायित्व और लोक-कल्याण से जोड़ा गया है। यह दृष्टि आज के डिजिटल युग में अत्यंत प्रासंगिक हो जाती है, जहाँ तकनीकी प्रगति के साथ-साथ मानवीय मूल्यों का संरक्षण एक बड़ी चुनौती बन गया है। डिजिटल शिक्षा यदि केवल सूचना और कौशल पर केंद्रित रहेगी तो वह समाज में असंतुलन उत्पन्न कर सकती है, किंतु यदि उसे IKS के मूल्य-आधारित दृष्टिकोण से जोड़ा जाए तो वह समग्र विकास का सशक्त माध्यम बन सकती है।

समकालीन शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली का महत्व अनेक स्तरों पर दृष्टिगोचर होता है। प्रथम, यह शिक्षा को सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता प्रदान करती है। वैश्वीकरण के दौर में जब शिक्षा प्रणालियाँ पश्चिमी मॉडल पर अधिक निर्भर हो गई हैं, तब भारतीय ज्ञान प्रणाली भारतीय समाज को अपनी जड़ों से जोड़कर शिक्षा को सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक बनाती है। द्वितीय, IKS शिक्षा में मूल्य, नैतिकता और जीवन-दृष्टि का समावेश करता है, जो आधुनिक शिक्षा की एक प्रमुख आवश्यकता है। तृतीय, IKS अंतःविषय अध्ययन को प्रोत्साहित करता है, जिससे विज्ञान, प्रौद्योगिकी और मानविकी के बीच संतुलन स्थापित होता है। चतुर्थ, IKS सतत विकास, पर्यावरणीय चेतना और सामाजिक समरसता जैसी वैश्विक चुनौतियों के समाधान में मार्गदर्शन प्रदान करता है।

डिजिटल युग में शिक्षा की वैश्विक पहुँच और तकनीकी क्षमताएँ भारतीय ज्ञान प्रणाली के लिए एक ऐतिहासिक अवसर प्रस्तुत करती हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म, ऑनलाइन पाठ्यक्रम, आभासी संग्रहालय, ई-पुस्तकालय और ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेज़ IKS को विश्व के कोने-कोने तक पहुँचाने में सक्षम हैं। साथ ही, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डेटा विश्लेषण जैसे उपकरण प्राचीन ग्रंथों के संरक्षण, अनुवाद और अनुसंधान को अधिक प्रभावी बना सकते हैं। इस प्रकार डिजिटल तकनीक भारतीय ज्ञान प्रणाली के पुनरुत्थान और वैश्विक प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS)- अवधारणा एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : भारतीय ज्ञान प्रणाली भारत की प्राचीन, समृद्ध और बहुआयामी बौद्धिक परंपरा का समेकित रूप है, जिसने सहस्राब्दियों तक भारतीय सभ्यता के चिंतन, आचरण और सामाजिक संरचना को दिशा प्रदान की है। भारतीय ज्ञान प्रणाली केवल ग्रंथों का संकलन नहीं, बल्कि एक जीवंत परंपरा है जिसमें ज्ञान, अनुभव, मूल्य और जीवन-दृष्टि का समन्वय निहित है। यह प्रणाली ज्ञान को केवल सूचनात्मक या तकनीकी क्षमता के रूप में नहीं देखती, बल्कि उसे मानव-जीवन के संपूर्ण विकास और लोक-कल्याण के साधन के रूप में स्वीकार करती है। इसी कारण भारतीय ज्ञान प्रणाली का अर्थ और दायरा अत्यंत व्यापक और बहुआयामी है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली का अर्थ उस ज्ञान-परंपरा से है जो भारत में वेदों से लेकर आधुनिक काल तक विभिन्न दार्शनिक, वैज्ञानिक, साहित्यिक, कलात्मक और सामाजिक धाराओं के माध्यम से विकसित हुई है। इसमें वेद, उपनिषद, दर्शन-शास्त्र, आयुर्वेद, योग, गणित, खगोल विज्ञान, वास्तु, व्याकरण, संगीत, नाट्यशास्त्र, शिल्प, कृषि विज्ञान, पर्यावरणीय चिंतन, नीति और सामाजिक संगठन जैसी विविध विधाएँ सम्मिलित हैं। इस प्रकार भारतीय ज्ञान प्रणाली का दायरा केवल शैक्षणिक विषयों तक सीमित न होकर जीवन के प्रत्येक पक्ष को समाहित करता है। यह ज्ञान प्रणाली मनुष्य और प्रकृति, विज्ञान और अध्यात्म, व्यक्ति और समाज के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती है, जिससे समग्र विकास संभव होता है।

प्राचीन भारतीय शिक्षा परंपराएँ भारतीय ज्ञान प्रणाली की आधारशिला हैं। वैदिक काल में शिक्षा गुरुकुल व्यवस्था पर आधारित थी, जहाँ गुरु और शिष्य के सान्निध्य में ज्ञान का संप्रेषण होता था। यह शिक्षा केवल शास्त्र-अध्ययन तक सीमित नहीं थी, बल्कि चरित्र निर्माण, आत्मसंयम, अनुशासन, सेवा और सामाजिक उत्तरदायित्व का प्रशिक्षण भी देती थी। उपनिषदों में विद्या को आत्मबोध और सत्य की खोज से जोड़ा गया, जिससे शिक्षा आध्यात्मिक और नैतिक उन्नयन का माध्यम बनी। बौद्ध और जैन परंपराओं ने शिक्षा को जनसामान्य तक पहुँचाया और करुणा, अहिंसा, समता और सामाजिक सेवा जैसे मूल्यों को ज्ञान का अभिन्न अंग बनाया।

प्राचीन विश्वविद्यालयों—जैसे तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला और वल्लभी—ने भारतीय ज्ञान प्रणाली को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठा दिलाई। इन विश्वविद्यालयों में दर्शन, गणित, चिकित्सा, खगोल, तर्कशास्त्र, राजनीति, भाषा और कला जैसे विविध विषयों का अध्ययन कराया जाता था। यहाँ शिक्षा अंतःविषय थी और शोध, संवाद तथा शास्त्रार्थ के माध्यम से ज्ञान का विकास किया जाता था। यह परंपरा भारतीय ज्ञान प्रणाली की वैज्ञानिक, तार्किक और शोधोन्मुख प्रकृति को दर्शाती है।

भारतीय सभ्यता में भारतीय ज्ञान प्रणाली की भूमिका केवल ज्ञान-संरक्षण तक सीमित नहीं रही, बल्कि उसने सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक संरचना को भी आकार दिया। सामाजिक व्यवस्था, शासन प्रणाली, न्याय, अर्थव्यवस्था, कृषि, चिकित्सा और पर्यावरणीय

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 8.152| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Refereed Journal |

|| Volume 12, Issue 3, May-June 2025 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2025.1203181

संरक्षण—सभी क्षेत्रों में भारतीय ज्ञान प्रणाली के सिद्धांतों का प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। भारतीय सभ्यता की सहिष्णुता, विविधता में एकता और सह-अस्तित्व की भावना भारतीय ज्ञान प्रणाली की ही देन है।

मध्यकाल में भक्ति और सूफी आंदोलनों ने भारतीय ज्ञान प्रणाली को जनभाषाओं के माध्यम से जनसामान्य तक पहुँचाया और इसे सामाजिक सुधार का साधन बनाया। आधुनिक काल में भी भारतीय ज्ञान प्रणाली ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन, शिक्षा नीति और सांस्कृतिक पुनर्जागरण को गहराई से प्रभावित किया। इस प्रकार भारतीय ज्ञान प्रणाली भारतीय सभ्यता की आत्मा के रूप में कार्य करती रही है।
इस ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली एक सतत विकसित होती हुई परंपरा है, जो अतीत, वर्तमान और भविष्य को जोड़ती है। डिजिटल युग में भारतीय ज्ञान प्रणाली का पुनराविष्कार और एकीकरण भारतीय शिक्षा और समाज के लिए नई संभावनाओं का द्वार खोल सकता है, बशर्ते इसके ऐतिहासिक अनुभव और मूल्यों को समकालीन संदर्भ में समझा जाए और लागू किया जाए।

डिजिटल युग और शिक्षा में परिवर्तन : डिजिटल युग ने शिक्षा के स्वरूप, संरचना और उद्देश्य में गहरे और व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने न केवल ज्ञान की उपलब्धता को सरल और व्यापक बनाया है, बल्कि शिक्षण-अधिगम की पारंपरिक सीमाओं को भी तोड़ दिया है। आज शिक्षा भौतिक कक्षाओं तक सीमित न रहकर आभासी कक्षाओं, डिजिटल प्लेटफार्मों और वैश्विक नेटवर्कों के माध्यम से संचालित हो रही है। डिजिटल तकनीक ने शिक्षा को अधिक सुलभ, लचीला और समावेशी बनाया है, जिससे विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और भौगोलिक पृष्ठभूमियों से आने वाले विद्यार्थियों को समान अवसर प्राप्त हो सके हैं।

डिजिटल तकनीक का शैक्षिक प्रभाव बहुआयामी है। सबसे पहले, इसने ज्ञान के लोकतंत्रीकरण को संभव बनाया है। ई-पुस्तकालय, ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेज, ऑनलाइन पाठ्यक्रम और डिजिटल डेटाबेस के माध्यम से विद्यार्थी विश्वस्तरीय ज्ञान तक सहज पहुँच बना सकते हैं। दूसरे, डिजिटल तकनीक ने शिक्षण को अधिक अंतःक्रियात्मक और अनुभवात्मक बनाया है। मल्टीमीडिया, सिमुलेशन, वर्चुअल रियलिटी और इंटरैक्टिव टूल्स के प्रयोग से जटिल अवधारणाओं को सरल और आकर्षक ढंग से समझाया जा सकता है। तीसरे, डिजिटल प्लेटफॉर्म शिक्षकों को शिक्षण विधियों में नवाचार करने का अवसर प्रदान करते हैं, जिससे अधिगम अधिक प्रभावी और छात्र-केंद्रित बनता है। ऑनलाइन शिक्षा और ई-लर्निंग डिजिटल परिवर्तन के सबसे प्रमुख उदाहरण हैं। आज विश्व के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम ऑनलाइन उपलब्ध हैं, जिससे शिक्षा वैश्विक मंच पर पहुँच गई है। ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म स्व-अध्ययन, समय-संयोजन और व्यक्तिगत अधिगम की सुविधा प्रदान करते हैं। इससे विशेष रूप से उन विद्यार्थियों को लाभ मिलता है जो भौगोलिक दूरी, आर्थिक सीमाओं या सामाजिक बाधाओं के कारण पारंपरिक शिक्षा से वंचित रह जाते थे। ऑनलाइन शिक्षा ने आजीवन अधिगम (Lifelong Learning) की अवधारणा को भी सशक्त किया है, जिससे व्यक्ति अपने पूरे जीवनकाल में ज्ञान और कौशल का निरंतर विकास कर सकता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) ने शिक्षा में नई संभावनाएँ खोल दी हैं। AI आधारित टूल्स व्यक्तिगत अधिगम, अनुकूली पाठ्यक्रम, स्वचालित मूल्यांकन और डेटा-आधारित शैक्षिक निर्णयों को संभव बनाते हैं। विद्यार्थी की सीखने की शैली, गति और रुचि के अनुसार शिक्षण सामग्री को अनुकूलित किया जा सकता है। इससे शिक्षा अधिक प्रभावी और समावेशी बनती है। इसके साथ ही AI शोध, भाषा अनुवाद, ज्ञान-संग्रहण और विश्लेषण के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, जिससे ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया तेज और सटीक हो गई है। भारत में "डिजिटल इंडिया" पहल ने शिक्षा क्षेत्र में डिजिटल परिवर्तन को गति प्रदान की है। राष्ट्रीय डिजिटल शिक्षा मंच, स्वयं, दीक्षा, ई-पाठशाला, राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय और वर्चुअल प्रयोगशालाएँ जैसे कार्यक्रम शिक्षा को तकनीकी रूप से सुदृढ़ बनाने के महत्वपूर्ण प्रयास हैं। इन पहलों ने शिक्षा को अधिक समावेशी, सुलभ और आधुनिक बनाया है। ग्रामीण और दूरदराज़ क्षेत्रों में भी डिजिटल माध्यमों के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराई जा रही है, जिससे शैक्षिक असमानताओं को कम करने में सहायता मिल रही है। डिजिटल युग ने शिक्षा को वैश्विक प्रतिस्पर्धा और नवाचार की दिशा में भी प्रेरित किया है। विद्यार्थी अब अंतरराष्ट्रीय शैक्षिक संसाधनों, शोध और नवाचारों से सीधे जुड़ सकते हैं। इससे ज्ञान का वैश्विक प्रवाह बढ़ा है और शिक्षा का स्तर अधिक प्रतिस्पर्धी और गुणवत्तापूर्ण हुआ है। साथ ही, डिजिटल तकनीक ने शिक्षकों को शोध और पेशेवर विकास के नए अवसर प्रदान किए हैं।

डिजिटल युग में भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्रासंगिकता : डिजिटल युग केवल तकनीकी परिवर्तन का युग नहीं है, बल्कि यह मानव जीवन की संपूर्ण संरचना में गहरे बदलाव का प्रतीक है। इस युग में ज्ञान की उपलब्धता, संचार की गति, वैश्विक संपर्क और तकनीकी निर्भरता अभूतपूर्व रूप से बढ़ी है। किंतु इस प्रगति के साथ-साथ अनेक सामाजिक, नैतिक और सांस्कृतिक चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। व्यक्ति तेजी से सूचना प्राप्त कर रहा है, परंतु विवेक, जीवन-दृष्टि और मानवीय संवेदना का संतुलित विकास अपेक्षित

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 8.152| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Refereed Journal |

|| Volume 12, Issue 3, May-June 2025 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2025.1203181

स्तर पर नहीं हो पा रहा है। ऐसे परिवेश में भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) की प्रासंगिकता अत्यंत बढ़ जाती है, क्योंकि IKS केवल ज्ञान नहीं, बल्कि जीवन जीने की समग्र दृष्टि प्रदान करती है।

डिजिटल युग में शिक्षा अधिकतर कौशल-आधारित और रोजगार-केंद्रित होती जा रही है। विद्यार्थी तकनीकी दक्षता प्राप्त कर रहे हैं, किंतु उनके भीतर नैतिक विवेक, सामाजिक उत्तरदायित्व और सांस्कृतिक चेतना का विकास अपेक्षित गति से नहीं हो पा रहा है। IKS इस एकांगी प्रवृत्ति का संतुलन प्रस्तुत करती है। यह शिक्षा को चरित्र निर्माण, लोककल्याण और आत्म-विकास से जोड़ती है। डिजिटल शिक्षा जब IKS से जुड़ती है, तब वह केवल सूचना-प्रदायिनी नहीं, बल्कि जीवन-निर्माण की प्रक्रिया बन जाती है।

आज विश्व अनेक जटिल समस्याओं से जूझ रहा है—पर्यावरण संकट, सामाजिक असमानता, मानसिक तनाव, सांस्कृतिक संघर्ष और तकनीकी निर्भरता। इन समस्याओं का समाधान केवल तकनीकी नवाचार से संभव नहीं है। इसके लिए समग्र दृष्टिकोण आवश्यक है, जिसमें विज्ञान, दर्शन, नैतिकता और संस्कृति का समन्वय हो। IKS इसी समन्वित दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है। इसमें प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व, संतुलित जीवन-शैली, करुणा, संयम और सतत विकास की अवधारणाएँ अंतर्निहित हैं, जो डिजिटल युग की वैश्विक चुनौतियों का मार्गदर्शन प्रदान करती हैं। डिजिटल युग में वैश्विक संस्कृति का प्रभाव तीव्र है, जिसके कारण अनेक समाजों में सांस्कृतिक पहचान का संकट उत्पन्न हो रहा है। IKS इस संदर्भ में सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता का आधार प्रदान करती है। यह युवाओं को अपनी परंपरा, इतिहास और बौद्धिक विरासत से जोड़कर उन्हें आत्मविश्वास और संतुलन प्रदान करती है। डिजिटल माध्यमों के द्वारा IKS की सामग्री वैश्विक स्तर पर प्रसारित होकर भारत की सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ कर सकती है।

डिजिटल तकनीक और IKS का समन्वय ज्ञान के नए क्षितिज खोलता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डेटा विश्लेषण और डिजिटल संग्रहण के माध्यम से प्राचीन ग्रंथों का संरक्षण, अनुवाद और अध्ययन पहले से कहीं अधिक सरल और प्रभावी हो गया है। इससे IKS न केवल संरक्षित हो रही है, बल्कि आधुनिक अनुसंधान और नवाचार के लिए भी सशक्त संसाधन बन रही है। अतः डिजिटल युग में IKS की प्रासंगिकता केवल सांस्कृतिक संरक्षण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आधुनिक शिक्षा, सामाजिक संतुलन और वैश्विक कल्याण के लिए अनिवार्य वैचारिक आधार बन चुकी है। IKS डिजिटल युग की गति को मानवीय दिशा प्रदान करती है और यह सुनिश्चित करती है कि तकनीकी प्रगति मानव कल्याण का माध्यम बने, न कि मानव मूल्यों का क्षरण।

भारतीय ज्ञान प्रणाली के एकीकरण में चुनौतियाँ : डिजिटल युग में भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) के एकीकरण को समझने के लिए यह आवश्यक है कि इसकी चुनौतियों और अवसरों का तुलनात्मक विश्लेषण किया जाए, क्योंकि दोनों ही पक्ष इस प्रक्रिया की दिशा और सफलता को निर्धारित करते हैं। एक ओर तकनीकी, संरचनात्मक और वैचारिक अवरोध मौजूद हैं, तो दूसरी ओर डिजिटल प्रौद्योगिकी, वैश्विक संपर्क और नीति-स्तरीय समर्थन जैसे अवसर भी इस एकीकरण को अभूतपूर्व गति प्रदान कर रहे हैं। इन दोनों पक्षों का संतुलित अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि IKS का भविष्य केवल बाधाओं से नहीं, बल्कि संभावनाओं से भी परिभाषित है।

चुनौतियों के संदर्भ में पहली समस्या शैक्षिक संरचना की कठोरता है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली मुख्यतः औद्योगिक युग की आवश्यकताओं के अनुसार विकसित हुई है, जहाँ विषयों का विभाजन, परीक्षा-केंद्रित मूल्यांकन और प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण प्रमुख है। इसके विपरीत IKS समग्र, मूल्य-आधारित और अंतःविषय ज्ञान प्रणाली है। यह अंतर IKS को पाठ्यक्रमों में समाहित करने में कठिनाई उत्पन्न करता है। किंतु यही चुनौती अवसर में भी परिवर्तित हो सकती है, क्योंकि IKS आधुनिक शिक्षा को अधिक समग्र, लचीला और जीवनोपयोगी बनाने की क्षमता रखती है। डिजिटल तकनीक इस परिवर्तन को संभव बनाती है, क्योंकि ऑनलाइन प्लेटफार्म और डिजिटल पाठ्यक्रम अंतःविषय सामग्री को सरलता से प्रस्तुत कर सकते हैं।

तकनीकी असमानता भी एक गंभीर चुनौती है। डिजिटल संसाधनों की असमान उपलब्धता IKS के व्यापक एकीकरण में बाधा उत्पन्न करती है। ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में इंटरनेट और उपकरणों की कमी शिक्षा की पहुँच को सीमित करती है। परंतु दूसरी ओर, डिजिटल इंडिया, राष्ट्रीय डिजिटल शिक्षा मंच और मोबाइल तकनीक जैसे कार्यक्रम इस अंतर को कम करने के लिए नए अवसर प्रस्तुत कर रहे हैं। सस्ते स्मार्टफोन, ऑफलाइन कंटेंट और बहुभाषी प्लेटफार्म IKS को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाने की क्षमता रखते हैं।

शिक्षक-प्रशिक्षण की कमी एक और प्रमुख बाधा है। अधिकांश शिक्षक आधुनिक विषयों में दक्ष हैं, परंतु IKS के दार्शनिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक आयामों से अपरिचित हैं। यह स्थिति IKS को केवल औपचारिक विषय बनाकर सीमित कर सकती है। किंतु यह चुनौती अवसर भी है, क्योंकि डिजिटल प्लेटफार्मों के माध्यम से शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम, ऑनलाइन कार्यशालाएँ और संसाधन-साझाकरण IKS विशेषज्ञता को व्यापक स्तर पर विकसित कर सकते हैं।

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 8.152| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Refereed Journal |

|| Volume 12, Issue 3, May-June 2025 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2025.1203181

भाषाई और वैचारिक जटिलता भी IKS के समक्ष चुनौती है। IKS का विशाल साहित्य संस्कृत, पालि, प्राकृत, तमिल, अरबी और फारसी जैसी भाषाओं में है, जिसका आधुनिक भाषाओं में रूपांतरण कठिन कार्य है। परंतु कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन अनुवाद और डिजिटल संग्रहण जैसी तकनीकें इस चुनौती को अवसर में बदल रही हैं। डिजिटल उपकरणों के माध्यम से ग्रंथों का संरक्षण, अनुवाद और वैश्विक प्रसार पहले से कहीं अधिक सरल और प्रभावी हो गया है।

सामाजिक मानसिकता और दृष्टिकोण की समस्या भी IKS के एकीकरण में बाधक रही है। कुछ वर्ग IKS को अतीत की वस्तु मानकर आधुनिक शिक्षा से असंगत समझते हैं। किंतु वैश्विक स्तर पर योग, आयुर्वेद, ध्यान, भारतीय दर्शन और सतत विकास की अवधारणाओं की बढ़ती स्वीकार्यता IKS के प्रति नई रुचि और सम्मान उत्पन्न कर रही है। यह बदलती मानसिकता IKS के लिए एक ऐतिहासिक अवसर है।

नीतिगत स्तर पर चुनौतियाँ और अवसर दोनों विद्यमान हैं। यद्यपि नीति में IKS को महत्व दिया जा रहा है, किंतु क्रियान्वयन में अभी भी बाधाएँ हैं। परंतु यह भी सत्य है कि शिक्षा नीति, डिजिटल शिक्षा पहलें और अनुसंधान अनुदान IKS के एकीकरण को संस्थागत समर्थन प्रदान कर रहे हैं।
इस तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि IKS के समक्ष विद्यमान चुनौतियाँ स्थायी नहीं हैं। डिजिटल युग इन्हें दूर करने के ऐसे अवसर प्रदान कर रहा है जो पूर्ववर्ती युगों में उपलब्ध नहीं थे। यदि नीति, प्रौद्योगिकी और शैक्षिक दृष्टिकोण में समन्वय स्थापित किया जाए, तो IKS आधुनिक शिक्षा का एक केंद्रीय स्तंभ बन सकता है। अतः यह कहा जा सकता है कि डिजिटल युग में IKS का एकीकरण संघर्ष और संभावना के संगम पर खड़ा है। चुनौतियाँ इस मार्ग को कठिन बनाती हैं, परंतु अवसर इस यात्रा को सार्थक और ऐतिहासिक बना सकते हैं। यही द्वंद्व इस अध्ययन का केंद्रीय निष्कर्ष भी है।

II. चुनौतियों के समाधान हेतु सुझाव

डिजिटल युग में भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) के प्रभावी एकीकरण के लिए केवल वैचारिक समर्थन पर्याप्त नहीं है; इसके लिए सुस्पष्ट नीति ढाँचे और ठोस व्यवहारिक कार्यान्वयन की आवश्यकता होती है। शिक्षा नीति, पाठ्यक्रम निर्माण, शिक्षक-प्रशिक्षण, संस्थागत संरचना और डिजिटल अवसंरचना—ये सभी ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ नीति और व्यवहार के समन्वय से ही IKS को वास्तविक रूप में शिक्षा प्रणाली का अभिन्न अंग बनाया जा सकता है।

नीतिगत स्तर पर यह आवश्यक है कि IKS को राष्ट्रीय और संस्थागत शिक्षा नीतियों के मूल उद्देश्य के रूप में स्वीकार किया जाए। शिक्षा नीति में IKS को केवल वैकल्पिक या पूरक विषय न मानकर उसे समग्र शिक्षा ढाँचे का केंद्रीय तत्व बनाया जाना चाहिए। इसके अंतर्गत पाठ्यक्रम में IKS के दार्शनिक, वैज्ञानिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आयामों को सभी स्तरों—विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय—पर क्रमबद्ध और समन्वित रूप से सम्मिलित किया जाना चाहिए। नीति में यह भी स्पष्ट किया जाना आवश्यक है कि IKS का उद्देश्य केवल परंपरा का संरक्षण नहीं, बल्कि आधुनिक शिक्षा को समृद्ध और संतुलित बनाना है।
व्यवहारिक स्तर पर IKS के एकीकरण के लिए सबसे महत्वपूर्ण भूमिका शैक्षणिक संस्थानों की है। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों को IKS को लागू करने के लिए विशेष शैक्षिक कार्यक्रम, वैकल्पिक पाठ्यक्रम, शोध परियोजनाएँ और डिजिटल सामग्री विकसित करनी चाहिए। शिक्षकों के लिए नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम, कार्यशालाएँ और ऑनलाइन पाठ्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए, जिससे वे IKS की अवधारणाओं और पद्धतियों को प्रभावी ढंग से शिक्षण में लागू कर सकें। डिजिटल प्लेटफार्मों के माध्यम से IKS सामग्री को बहुभाषी और सुलभ बनाना भी व्यवहारिक क्रियान्वयन का महत्वपूर्ण पक्ष है।

नीति स्तर पर शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों में IKS को अनिवार्य घटक के रूप में सम्मिलित किया जाए और डिजिटल प्लेटफार्मों के माध्यम से बहुभाषी शिक्षण सामग्री विकसित की जाए, ताकि IKS समाज के सभी वर्गों तक पहुँच सके। इसके अतिरिक्त, IKS आधारित अनुसंधान, नवाचार और डिजिटल संरक्षण के लिए वित्तीय एवं संस्थागत समर्थन को सुदृढ़ किया जाए, जिससे इसका एकीकरण व्यवहारिक, प्रभावी और दीर्घकालिक बन सके। नीति और व्यवहार के बीच समन्वय के बिना IKS का एकीकरण केवल दस्तावेज़ों तक सीमित रह जाएगा। इसके लिए वित्तीय संसाधनों, तकनीकी सहयोग और संस्थागत प्रतिबद्धता की भी आवश्यकता होती है। जब नीति-निर्माता, शिक्षाविद् और तकनीकी विशेषज्ञ मिलकर IKS को डिजिटल शिक्षा में लागू करते हैं, तब यह एक जीवंत और प्रभावी शैक्षिक आंदोलन का रूप ले सकता है।

अतः नीति एवं व्यवहारिक पक्ष का सुदृढ़ समन्वय ही डिजिटल युग में IKS के सफल एकीकरण की आधारशिला है। यह समन्वय शिक्षा को केवल आधुनिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक रूप से समृद्ध, नैतिक रूप से सुदृढ़ और सामाजिक रूप से उत्तरदायी बनाता है।

III. निष्कर्ष

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 8.152| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Refereed Journal |

|| Volume 12, Issue 3, May-June 2025 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2025.1203181

डिजिटल युग में भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) का एकीकरण आधुनिक शिक्षा के लिए अनिवार्य हो गया है। यह एकीकरण शिक्षा को केवल तकनीकी दक्षता तक सीमित न रखकर उसे मूल्य-आधारित, समग्र और मानवीय स्वरूप प्रदान करता है। शोध से यह भी स्पष्ट हुआ कि IKS शिक्षा को सांस्कृतिक आत्मबोध, नैतिक विवेक और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़कर शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक अर्थपूर्ण बनाता है। लेकिन IKS के एकीकरण में अनेक चुनौतियाँ—जैसे संरचनात्मक जड़ता, तकनीकी असमानता, प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी और सामाजिक मानसिकता—विद्यमान हैं, किंतु डिजिटल प्रौद्योगिकी, शिक्षा नीति में समर्थन, वैश्विक रुचि और तकनीकी नवाचार जैसे अवसर इन चुनौतियों को पार करने की ठोस संभावनाएँ भी प्रदान करते हैं।

यदि नीति, तकनीक और शैक्षिक दृष्टिकोण में समन्वय स्थापित किया जाए तो IKS न केवल भारतीय शिक्षा को सुदृढ़ करेगा, बल्कि वैश्विक शिक्षा-परिदृश्य में भारत को बौद्धिक नेतृत्व भी प्रदान कर सकता है। इसके लिए आवश्यक है कि डिजिटल युग में भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) को शिक्षा नीति के केंद्रीय घटक के रूप में स्थापित किया जाना चाहिए। इसके लिए पाठ्यक्रमों में IKS को सभी स्तरों पर चरणबद्ध रूप से समाहित किया जाए तथा अंतःविषय संरचना को प्रोत्साहित किया जाए, जिससे विज्ञान, प्रौद्योगिकी, मानविकी और भारतीय ज्ञान परंपरा के बीच संतुलन स्थापित हो सके।

भविष्य में अनुसंधान और शैक्षिक विकास की दिशा इस ओर उन्मुख होनी चाहिए कि भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) को डिजिटल शिक्षा के साथ और अधिक सुदृढ़ रूप से एकीकृत किया जाए। इसके अंतर्गत IKS आधारित डिजिटल पाठ्यक्रमों के प्रभाव का मूल्यांकन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से प्राचीन ग्रंथों के संरक्षण एवं अनुवाद, तथा अंतःविषय अनुसंधान को प्रोत्साहन जैसे क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। इसके साथ ही विद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थानों में IKS को व्यवहारिक रूप से लागू करने के मॉडल विकसित किए जाएँ, जिससे शिक्षा न केवल तकनीकी रूप से उन्नत हो बल्कि सांस्कृतिक, नैतिक और सामाजिक रूप से भी समृद्ध बने। इस दिशा में निरंतर नीति-समर्थन, संस्थागत सहयोग और अकादमिक प्रतिबद्धता भारत को वैश्विक ज्ञान-परिदृश्य में सुदृढ़ नेतृत्व प्रदान कर सकती है।

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, जे. सी. (2014). शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य. नई दिल्ली: शिप्रा प्रकाशन।
2. अग्रवाल, आर. (2019). भारतीय ज्ञान प्रणाली और समकालीन शिक्षा. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 12(2), 45–58.
3. आचार्य, एस. (2022). डिजिटल शिक्षा और भारतीय सांस्कृतिक चेतना. एशियन जर्नल ऑफ एजुकेशन, 10(1), 33–47.
4. गाँधी, मोहनदास करमचन्द. (1962). बुनियादी शिक्षा. अहमदाबाद: नवजीवन प्रकाशन।
5. गुप्ता, मनोज. (2021). डिजिटल युग में मूल्य आधारित शिक्षा. शिक्षा विमर्श, 9(3), 60–74.
6. जोशी, राजेश. (2023). भारतीय ज्ञान प्रणाली और नई शिक्षा नीति. जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन, 49(2), 25–39.
7. जोशी, सीमा. (2024). IKS और डिजिटल पाठ्यक्रम विकास. भारतीय शिक्षा जर्नल, 11(1), 18–32.
8. कुमार, कृष्ण. (2005). शिक्षा का राजनीतिक एजेंडा. नई दिल्ली: सेज प्रकाशन।
9. कुमारी, सुनीता. (2020). नैतिक शिक्षा और सामाजिक उत्तरदायित्व. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन, 8(1), 45–53.
10. मेहता, प्रतीक. (2024). डिजिटल युग में भारतीय ज्ञान परंपरा. एशियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज, 12(1), 61–74.
11. मिश्रा, शिवकुमार. (1998). भारत में शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन. नई दिल्ली: कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग।
12. राष्ट्रीय शिक्षा नीति. (2020). शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. नई दिल्ली।
13. पटेल, दीपक. (2023). सेवा-अधिगम और IKS का एकीकरण. जर्नल ऑफ वैल्यू एजुकेशन, 15(3), 88–101.
14. राधाकृष्णन, सर्वपल्ली. (1962). भारतीय दर्शन (खंड 1–2). लंदन: जॉर्ज एलेन एवं अनविन।
15. राय, ललित. (2003). बौद्ध शिक्षा और सामाजिक विकास. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
16. शर्मा, आर. एन. (1985). भारत में शिक्षा का इतिहास. मेरठ: सुरजीत प्रकाशन।
17. सिंह, अमर. (2016). शिक्षा, नैतिकता एवं नागरिकता. इंडियन जर्नल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च, 9(2), 120–132.
18. टैगोर, रवीन्द्रनाथ. (1961). विश्वमानव की ओर. नई दिल्ली: एशिया पब्लिशिंग हाउस।
19. वर्मा, पवन. (2011). भारतीय होना: इक्कीसवीं सदी का सत्य. नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स।
20. वर्मा, सुनील, एवं गुप्ता, राजेश. (2024). डिजिटल शिक्षा और लोककल्याण. जर्नल ऑफ कंटेम्परेरी एजुकेशन, 14(2), 33–47.
21. विवेकानन्द, स्वामी. (1989). शिक्षा और चरित्र निर्माण. कोलकाता: अद्वैत आश्रम।
22. भावे, विनोबा. (1974). शिक्षा और समाज. वार्धा: सर्व सेवा संघ।
23. दास, अरुण. (2019). डिजिटल शिक्षा की चुनौतियाँ. एजुकेशन टुडे, 6(1), 41–52.
24. यादव, नीरज. (2023). IKS आधारित शिक्षा मॉडल. जर्नल ऑफ सोशल डेवलपमेंट, 11(1), 19–32.
25. कपूर, संजय. (2024). भारतीय ज्ञान प्रणाली और सतत विकास. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन स्टडीज, 8(1), 1–15.

26. सक्सेना, सुधा. (2022). मूल्य शिक्षा और युवा विकास. समकालीन शिक्षा शोध, 5(2), 64–78.
27. वर्मा, सीमा. (2011). भक्ति आंदोलन और लोकजागरण. भारतीय संस्कृति जर्नल, 7(2), 55–67.
28. गुप्ता, रमेश. (2018). शिक्षा में नवाचार और डिजिटल माध्यम. भारतीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी जर्नल, 4(1), 22–35.

IJARETY

International Journal of Advanced Research in Education and Technology

ISSN: 2394-2975 Impact Factor: 8.152

www.ijarety.in editor.ijarety@gmail.com